सत्यमेव जयते

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़े महाविद्यालय

एवं

बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय

07 मार्च 2025

प्रेरणास्त्रोत एवं मार्गदर्शक

श्रीमती आनंदीबेन पटेल

मा. राज्यपाल, उत्तर प्रदेश एवं कुलाधिपति

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

संरक्षक

प्रो. आनंद कुमार त्यागी

कुलपति

श्रीमती दीप्ति मिश्रा

कुलसचिव

श्री संतोष कुमार शर्मा

वित्त अधिकारी

प्रो. राजेश कुमार मिश्रा

नोडल अधिकारी

पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़े महाविद्यालय एवं

बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय

प्रो. निरंजन सहाय

समन्वयक

पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़े महाविद्यालय एवं

बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय

सदस्य

प्रो. अनुराग कुमार

डॉ. अविनाश कुमार सिंह

विशेष सहयोग

उज्जवल कुमार सिंह

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

कुलगीत

विद्या के सिद्धपीठ जय महान, हे!
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे!
भारत की भव्य भारती के स्वर तुम!
राष्ट्रभावना के संदेश मुखर तुम!
बलिदानों के गुरुकुल महाप्राण हे!
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे!
हे अभिनव भारत के भाग्य-विधाता!
कोटि-कोटि जनता के मुक्ति प्रदाता!
जन-गण को करते नेतृत्व-दान हे!
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे!
ऋषियों की वाणी के तुम व्याख्याता!
नूतन विद्याओं के अनुसंधाता!
आत्मा के शिल्पी संकल्पवान हे!
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे!
गांधी की गरिमा से ओत-प्रोत तुम!
शिवप्रसाद की विभूति, शक्ति-स्रोत तुम!
तुममें भगवानदास मूर्तिमान हे!
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे!
कल्पना नरेन्द्रदेव की विराट तुम!
पुण्य भूमि भारत माँ के ललाट तुम!
दे रहे समन्वय का दिव्य ज्ञान हे!
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे!
इस विद्या-मंदिर की अमर भारती।
राष्ट्रदेवता की कर रही आरती!
ज्योतित हम दीपवर्तिका-समान हे!
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे!
सत्य अंहिसा के हे दृढ व्रतधारी!
युग-युग तक अटल रहे मूर्ति तुम्हारी!
युग-युग तक विश्व करे कीर्तिगान हे!
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे!
नभ में लहराये यह पुण्य-पताका!
जिस पर है चित्र टँका भारत माँ का!
शंभु के त्रिशूल-शलाका-प्रमाण हे!
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे!

अनुक्रमाणिका

क्रम संख्या	विषय – विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	कुलगीत	4
2.	अनुक्रमणिका	5
3.	माननीय कुलपति जी का सन्देश	6
4.	कुलसचिव का सन्देश	7
5.	समन्वयक की कलम से	8
6.	महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ (परिचय)	9
7.	प्रस्तावना	11
8.	कार्यक्रम का उद्देश्य	13
9.	कार्यक्रम रिपोर्ट	14
10.	कार्यक्रमों की झलकियाँ	16
11.	जब मैंने पहली निजी पुस्तक ख़रीदी / डॉ. *धर्मवीर भारती*	38
12.	पुस्तकों के लेखन एवं प्रकाशन की दिलचस्प कहानी / प्रो. *निरंजन सहाय, उज्जवल कुमार सिंह*	43

प्रो0 आनन्द कुमार त्यागी
कुलपति
Prof. Anand K. Tyagi
Vice Chancellor

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी- 221002
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi - 221002

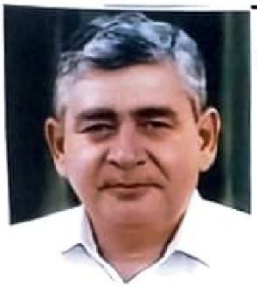

संदेश

"पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़ें महाविद्यालय एवं बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय" कार्यक्रम के अवसर पर मैं समस्त विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं विश्वविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ!

शिक्षा ही किसी राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला होती है। यह पहल न केवल ज्ञानार्जन को प्रोत्साहित करेगी, बल्कि हमारे विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों के सर्वांगीण विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगी।

पढ़ने की संस्कृति वह परंपरा है, जिसमें ज्ञान प्राप्ति के लिए नियमित रूप से पुस्तकों, लेखों और अन्य साहित्यिक सामग्री का अध्ययन किया जाता है। यह न केवल ज्ञानार्जन का माध्यम है, बल्कि सोचने, विश्लेषण करने और नए विचारों को जन्म देने की क्षमता भी विकसित करती है। पढ़ने की आदत से व्यक्ति में भाषा कौशल, तार्किक चिंतन और सृजनात्मकता का विकास होता है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में सतत् अध्ययन की आवश्यकता और भी बढ़ गई है, जहाँ नवीनतम जानकारी और अद्यतन ज्ञान सफलता की कुंजी बन गए हैं। पढ़ने की संस्कृति समाज में बौद्धिक जागरूकता फैलाने के साथ–साथ मूल्यबोध, संवेदनशीलता और नैतिक दृष्टिकोण को भी मजबूत करती है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने आसपास की घटनाओं को गहराई से समझ सकता है और सामाजिक परिवर्तन का संवाहक बन सकता है। डिजिटल युग में जहाँ सतही जानकारी की अधिकता है, वहीं गंभीर अध्ययन की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। इसलिए, विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है ताकि विद्यार्थी केवल परीक्षा के लिए नहीं, बल्कि जीवन के लिए पढ़ें और एक जागरूक, सक्षम और जिम्मेदार नागरिक बन राष्ट्र सेवा के विविध अध्यायों को नए अभियानों से संवर्धित करने में सफल हों।

आइए हम सब मिलकर शिक्षा के इस अभियान को सफल बनाएँ, गुणवत्ता एवं नवाचार को अपनाते हुए अपने शिक्षण संस्थानों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य और विश्वविद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित,

(प्रो0 ए0के0 त्यागी) 26/4/25
कुलपति

Tel : +91-542-2225472 (O), 2221268 (R), 2223160(Camp Off.), Fax : 2225472(O), 2221268 (R), e-mail: vcmgkvp@gmail.com

कुलसचिव
Registrar

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी–221002
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi-221002
Email : registrarmgkvp@gmail.com

पत्रांक/Ref. **दिनांक/Date.** 26 अप्रैल, 2025

संदेश

महामहिम राज्यपाल माननीया आनंदीबेन पटेल के निर्देश के अनुपालन में तथा माननीय कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी के नेतृत्त्व में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ द्वारा आयोजित "पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़े महाविद्यालय" एवं "बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय" कार्यक्रम शिक्षा के क्षेत्र में एक नए अध्याय की शुरुआत है। इस कार्यक्रम ने न केवल शैक्षिक उत्कृष्टता को बढ़ावा दिया है, बल्कि यह सामाजिक सशक्तिकरण, ज्ञानवर्धन और समग्र विकास के लिए एक मील का पत्थर भी साबित हुआ। इसके माध्यम से हम विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ उन्हें वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सक्षम बनाने के प्रयास में भी सफल हुए।

हमारे विश्वविद्यालय के इस महत्त्वपूर्ण पहल में विद्यार्थियों, शिक्षक/शिक्षिकाओं और सभी कर्मचारियों का योगदान अनमोल था। इस तरह के कार्यक्रम शिक्षा की महत्ता और उसके प्रभाव को सभी के बीच फैलाने का कार्य करते रहेंगे। ये न केवल विश्वविद्यालय के लिए, बल्कि समाज के लिए भी एक सकारात्मक बदलाव लायेंगे, जो दीर्घकालिक विकास को सुनिश्चित करेगा।

मुझे विश्वास है कि कार्यक्रम की स्मृतियों को समर्पित यह पुस्तिका इस आयोजन की सफलता और उसके उद्देश्यों के बारे में अधिक–से–अधिक लोगों तक पहुँचाने में सहायक होगी। इसके माध्यम से हम शिक्षा के प्रति समाज में जागरुकता और उत्साह बढ़ाएँगे, ताकि आने वाले समय में हमारे विद्यार्थी न केवल उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करें, बल्कि समाज के नेतृत्व में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँ।

मैं इस प्रयास को सफल बनाने के लिए प्रो0 निरंजन सहाय एवं उनकी टीम के साथ ही सभी कर्मचारियों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को बधाई देती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि विश्वविद्यालय परिवार इसी तरह सामूहिक प्रयत्नों के बल पर सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहेगा।

(दीप्ति मिश्रा)
कुलसचिव

समन्वयक की कलम से

प्रिय साथियों,

"**पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़े महाविद्यालय एवं बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय**" कार्यक्रम के सफल आयोजन के बाद अब हम एक महत्त्वपूर्ण पहल — इस ऐतिहासिक उपलब्धि को स्मरणीय बनाने हेतु **लघु-पुस्तिका प्रकाशन** की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यह पुस्तिका न केवल इस भव्य आयोजन की जीवंत झलक प्रस्तुत करेगी, बल्कि इसमें सम्मिलित अनुभव, उपलब्धियाँ, विचार और भविष्य की योजनाएँ भी प्रकट होंगी। यह हमारे संस्थान की शैक्षणिक और सांस्कृतिक चेतना का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ बनेगी, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत का कार्य करेगी।

इस कार्यक्रम का प्रभार देने के लिए हमारा पूरा आयोजन समूह **महामहिम राज्यपाल माननीया आनंदीबेन पटेल, माननीय कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी** एवं **कुलसचिव श्रीमती दीप्ति मिश्रा जी** के प्रति कोटिशः आभार प्रकट करता है।

इस पुस्तिका के माध्यम से हम उन सभी महत्वपूर्ण क्षणों को संजोने का प्रयास कर रहे हैं, जिन्होंने इस आयोजन को विशेष बनाया। इसमें प्रतिभागी छात्र/छात्राओं, शिक्षक/शिक्षिकाओं, अतिथियों एवं आयोजकों के बहुमूल्य योगदान को भी सम्मानपूर्वक स्थान मिलेगा। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों में जो शैक्षणिक उत्साह, नवाचार की भावना और सहभागिता देखने को मिली, वह वास्तव में अभूतपूर्व रही।

यह पुस्तिका न केवल एक यादगार दस्तावेज़ होगी, बल्कि यह हमें हमारे प्रयासों का मूल्यांकन करने, अपनी उपलब्धियों पर गर्व करने और भविष्य के लिए नए लक्ष्य निर्धारित करने की भी प्रेरणा देगी। यह विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के विकास यात्रा में एक मील का पत्थर सिद्ध होगी।

अंत में, मैं समस्त विद्यार्थियों, शिक्षकों और आयोजन समिति के सदस्यों को इस भव्य आयोजन की सफलता हेतु आभारप्रकट करता हूँ। आइए, हम सब मिलकर इस पुस्तिका को एक ऐसी जीवंत धरोहर बनाएँ, जो न केवल आज के प्रयासों को सम्मानित करे, बल्कि आने वाले समय में भी प्रेरणा का स्रोत बनी रहे। इस पुस्तिका के प्रकाशन हेतु बौद्धिक सहभागिता के लिए मैं हिंदी और अन्य भारतीय भाषा विभाग में शोधार्थी **उज्जवल कुमार सिंह**, डॉक्टोरल फेलो, राष्ट्रीय परीक्षण सेवा – भारत, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के प्रति सहज आत्मीयता का अनुभव कर रहा हूँ।

इसी कार्यक्रम के साथ "नशा मुक्त भारत एवं दहेज़ मुक्त भारत" हेतु शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सप्रेम,

प्रो. निरंजन सहाय

समन्वयक

पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़े महाविद्यालय एवं बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के गर्भ से जन्मा एक ऐतिहासिक शिक्षण संस्थान है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी नगर में स्थित यह विश्वविद्यालय भारतीय स्वाधीनता संग्राम के मूल्यों, आदर्शों और लक्ष्यों को शिक्षा के माध्यम से व्यापक जन-जीवन तक पहुँचाने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था। इसकी स्थापना के पीछे केवल शैक्षणिक कारण नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्जागरण की भावना भी सक्रिय थी। आज भी यह विद्यापीठ अपने मूल आदर्शों को संभालते हुए उच्च शिक्षा, शोध, नवाचार और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ की स्थापना 10 फरवरी 1921 को डॉ. भगवान दास, शिवप्रसाद गुप्त और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के प्रयासों से हुई थी। इसके स्थापना समारोह में स्वयं महात्मा गांधी उपस्थित रहे थे और उन्होंने इसे भारतीय आत्मनिर्भरता की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल बताया था। इस संस्थान का मूल उद्देश्य था – विदेशी शासकों द्वारा संचालित शिक्षा व्यवस्था का विकल्प प्रस्तुत करना और राष्ट्रवादी चेतना से ओत-प्रोत विद्यार्थियों को तैयार करना। "स्वदेशी शिक्षा" के आदर्श को साकार करने के लिए विद्यापीठ ने एक स्वतंत्र पाठ्यक्रम और मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली विकसित की। यहाँ के छात्र ब्रिटिश विश्वविद्यालयों की डिग्रियों के स्थान पर "विद्यावाचस्पति", "विद्याभास्कर", "शास्त्री" आदि उपाधियाँ ग्रहण करते थे।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ की पहचान केवल एक शैक्षणिक संस्था के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम के एक सक्रिय केंद्र के रूप में भी रही है। विद्यापीठ के छात्रों और शिक्षकों ने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। यहाँ से शिक्षा ग्रहण करने वाले अनेक विद्यार्थियों ने बाद में स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं। आचार्य नरेन्द्र देव, लाल बहादुर शास्त्री, चंद्रशेखर आज़ाद जैसे महान व्यक्तित्व इससे जुड़े रहे। विद्यापीठ का हर विद्यार्थी अपने आपको 'राष्ट्रधर्म' के प्रति समर्पित मानता था। ब्रिटिश सरकार ने इस संस्था की गतिविधियों को 'राजद्रोहात्मक' मानते हुए कई बार इसके संचालन में बाधा डाली, किन्तु इसके संस्थापकों और संचालकों ने हार नहीं मानी और इसे अनवरत आगे बढ़ाया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मान्यता प्रदान की गई और इसे 1974 में राज्य विश्वविद्यालय का दर्जा मिला। इसके बाद विद्यापीठ ने आधुनिक शिक्षा के

विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की। आज विद्यापीठ में मानविकी, समाजशास्त्र, पत्रकारिता, विधि, वाणिज्य, विज्ञान, प्रबंधन, शिक्षा, कृषि, कंप्यूटर विज्ञान, चिकित्सा जैसे विभिन्न संकाय सक्रिय हैं। विश्वविद्यालय ने अकादमिक ढाँचे का विस्तार करते हुए विभिन्न संकायों और विभागों की स्थापना की। साथ ही, स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध कार्यक्रमों को प्रारंभ कर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति मजबूत की। शिक्षा के साथ-साथ अनुसंधान को भी विशेष प्राथमिकता दी गई। विद्यार्थियों को समाजोपयोगी विषयों पर शोध एवं नवाचार हेतु प्रेरित किया गया, जिससे विश्वविद्यालय की शोध संस्कृति विकसित हुई।

समय के साथ महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ ने अपने परिसरों और अधीनस्थ महाविद्यालयों का भी विस्तार किया। वाराणसी मुख्यालय के अतिरिक्त प्रदेश के विभिन्न जिलों में इसके महाविद्यालय संबद्ध हैं। विश्वविद्यालय ने डिजिटल शिक्षा, ई-लाइब्रेरी और आधुनिक प्रयोगशालाओं जैसी सुविधाओं के विकास पर भी ध्यान केंद्रित किया, जिससे इसकी गुणवत्ता में निरंतर सुधार हुआ।

आज विद्यापीठ में लाखों छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत हैं, और यह उत्तर भारत के प्रमुख राज्य विश्वविद्यालयों में गिना जाता है। शिक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा यह बौद्धिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। वर्तमान में इस विश्वविद्यालय के कुलपति सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्, वैज्ञानिक एवं प्रशासक प्रो. आनंद कुमार त्यागी के नेतृत्त्व में नित नई उपलब्धियाँ हासिल कर रहा है।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ ने अपने विकास के हर चरण में गांधीवादी मूल्यों — सत्य, अहिंसा, स्वदेशी और सेवा — को आधार बनाकर आगे बढ़ने का प्रयास किया है। आज भी यह विश्वविद्यालय इन्हीं आदर्शों के साथ शिक्षा के क्षेत्र में नवीन उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है और भारतीय युवाओं को ज्ञान, चरित्र और सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त नागरिक बनाने के अपने मिशन में संलग्न है।

विद्यापीठ पर प्रसार भारती, वाराणसी की विशेष पेशकश :

“वैभवपूर्ण विरासत : काशी विद्यापीठ”

शोध, परिकल्पना एवं स्वर – **प्रो. निरंजन सहाय**

https://youtu.be/ZazFLCCR0zY?si=uCP1yo4y3HpkkaBg

प्रस्तावना

"पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़े महाविद्यालय एवं बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय" कार्यक्रम राज्य सरकार की उच्च शिक्षा को सुदृढ़, समावेशी तथा गुणवत्तापरक बनाने की महत्त्वाकांक्षी पहल है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षण संस्थानों को अध्ययन, अध्यापन, अनुसंधान एवं नवाचार के उत्कृष्ट केंद्रों के रूप में विकसित करना है, जिससे वे ज्ञान आधारित समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकें। इसमें विद्यार्थियों में अकादमिक उत्कृष्टता के साथ-साथ चरित्र निर्माण, राष्ट्रभक्ति एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के गुणों को भी जाग्रत करने का सतत प्रयास किया जा रहा है। इसका मूल उद्देश्य शिक्षण संस्थानों को न केवल अध्ययन और अध्यापन के केंद्र के रूप में विकसित करना है, बल्कि उन्हें नवाचार, अनुसंधान और सामाजिक पुनर्निर्माण का भी सशक्त मंच बनाना है। आज के बदलते वैश्विक परिदृश्य में विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों की भूमिका केवल ज्ञान के प्रसार तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वे राष्ट्र निर्माण, सामाजिक उत्थान, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी भूमिका निभाने के केंद्र बन चुके हैं। इस कार्यक्रम के माध्यम से एक ऐसा वातावरण तैयार किया जा रहा है, जिसमें विद्यार्थी अपनी अकादमिक क्षमताओं का अधिकतम विकास करते हुए व्यक्तित्व, चरित्र और सामाजिक चेतना से भी समृद्ध हो सकें। अध्ययन और अध्यापन की गुणवत्ता में निरंतर सुधार, अनुसंधान संस्कृति का सशक्तीकरण, नवाचार को बढ़ावा देना और उच्च शिक्षा में समावेशिता सुनिश्चित करना इस पहल के प्रमुख लक्ष्य हैं।

यह कार्यक्रम विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में एक नई ऊर्जा और सक्रियता का संचार करता है। "पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़े महाविद्यालय" पहल का आशय केवल कक्षाओं में औपचारिक अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका व्यापक फलक छात्रों में जिज्ञासा, विश्लेषण क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारी के भाव को विकसित करना है। वहीं "बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय" का ध्येय संस्थानों के संपूर्ण विकास को सुनिश्चित करना है— जिसमें अधोसंरचना सुदृढ़ीकरण, डिजिटल सक्षमता, शोध सुविधाओं का विस्तार, रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों का विकास और विद्यार्थियों के लिए बहुआयामी अवसरों का सृजन शामिल है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत ज्ञानार्जन को जीवनोपयोगी बनाने, शिक्षा को रोजगार से जोड़ने तथा वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने की दिशा में ठोस प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही, नैतिक मूल्यों, राष्ट्रभक्ति और मानवतावाद को शिक्षा की मूल आत्मा के रूप में पुनर्स्थापित करने पर विशेष बल दिया जा रहा है। कार्यक्रम के अंतर्गत "पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़े महाविद्यालय" पहल के माध्यम से अध्ययनशील वातावरण का सृजन तथा "बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय" पहल द्वारा अधोसंरचना, तकनीकी संसाधनों एवं अकादमिक नवाचारों का विकास सुनिश्चित किया जा रहा है। इससे शिक्षा को रोजगारोन्मुखी, शोधोन्मुखी एवं जीवनोपयोगी बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाए गए हैं। शिक्षा को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाने हेतु पाठ्यक्रमों का अद्यतन, डिजिटल संसाधनों का सुदृढ़ीकरण तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विविध गतिविधियाँ संचालित की गई हैं।

प्रस्तुत पुस्तिका''पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़े महाविद्यालय एवं बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय'' कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन, विभिन्न गतिविधियों, नवाचारों एवं उपलब्धियों का सुव्यवस्थित संकलन है। यह दस्तावेज़ न केवल वर्तमान प्रयासों का साक्ष्य है, अपितु भावी पीढ़ियों के लिए दिशा-निर्देशक एवं प्रेरणा-स्रोत भी सिद्ध होगा। हम विश्वास करते हैं कि इस अभियान से जुड़े समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों की सामूहिक प्रतिबद्धता से उच्च शिक्षा क्षेत्र में नवोन्मेष, गुणवत्ता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के नए प्रतिमान स्थापित होंगे, जो देश को 'ज्ञान-आधारित सशक्त राष्ट्र' बनाने के मार्ग में एक महत्वपूर्ण योगदान देंगे। आज जब भारत वैश्विक मंच पर अपनी उपस्थिति सशक्त रूप से दर्ज करा रहा है, तब शिक्षा क्षेत्र में इस तरह के व्यापक और दूरदर्शी कार्यक्रम अनिवार्य हो जाते हैं। ''पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़े महाविद्यालय एवं बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय'' जैसे प्रयासों के माध्यम से हम न केवल ज्ञान का विस्तार कर रहे हैं, बल्कि एक समर्थ, समावेशी, नवोन्मेषी और सशक्त भारत के निर्माण की दिशा में भी अग्रसर हैं। यही इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी उपलब्धि और प्रेरणा है।

कार्यक्रम का उद्देश्य

"पढ़े विश्वविद्यालय/पढ़े महाविद्यालय एवं बढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय" कार्यक्रम उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने का प्रयास करता है, बल्कि यह विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों को समग्र रूप से सशक्त बनाने की दिशा में भी अग्रसर है। यह कार्यक्रम न केवल पाठ्यक्रम और अध्यापन पद्धतियों में सुधार करने का उद्देश्य रखता है, बल्कि यह शिक्षा की संस्कृति को भी सुदृढ़ करने का काम करता है। पढ़ाई की संस्कृति का विकास, यह सुनिश्चित करता है कि विद्यार्थी न केवल अकादमिक दृष्टि से उत्कृष्ट हों, बल्कि वे समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को भी समझें।

पढ़ने की संस्कृति केवल किताबों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह एक मानसिकता और जीवन जीने का तरीका बन जाती है। यह संस्कृति विद्यार्थियों को केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि उनके सामाजिक और व्यक्तिगत विकास में भी सहायता करती है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य सिर्फ़ सूचनाओं का संचय नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य के मानसिक, नैतिक और बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करती है। जब पढ़ने की संस्कृति का प्रसार होता है, तो यह एक विचारशील और जिम्मेदार नागरिक तैयार करता है, जो अपने समाज और देश के प्रति जागरूक और संवेदनशील होता है। इसके अलावा, पढ़ाई से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और सृजनात्मकता का विकास होता है, जो उन्हें भविष्य में किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार करता है।

यह पहल विद्यार्थियों को न केवल बेहतर शिक्षा प्रदान करती है, बल्कि उन्हें नौकरी के लिए तैयार करने और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी कार्य करती है। इस कार्यक्रम का प्रभाव समाज में एक सशक्त और समृद्ध नागरिक वर्ग तैयार करने में देखने को मिलेगा, जो देश के विकास में अपना योगदान देने में सक्षम होगा।

कार्यक्रम रिपोर्ट

"पढ़े विश्वविद्यालय एवं बढ़े विश्वविद्यालय" तथा "दहेज़ मुक्त भारत एवं नशा मुक्त भारत" अभियान के अंतर्गत शपथ ग्रहण का भव्य आयोजन

मा. राज्यपाल एवं कुलाधिपति से प्राप्त पत्र 1312/32/जी.एस./2025 दिनांक 28 फरवरी 2025 के अनुपालन में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में "पढ़े विश्वविद्यालय एवं बढ़े विश्वविद्यालय" कार्यक्रम का आयोजन माननीय कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी के नेतृत्व में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में शैक्षणिक गुणवत्ता को बढ़ावा देना और विद्यार्थियों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करना था। माननीय कुलपति ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि यह अभियान केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें संपूर्ण विश्वविद्यालय के विकास की परिकल्पना की गई है। उन्होंने कहा कि "पढ़े विश्वविद्यालय" का अर्थ है शैक्षणिक वातावरण को अधिक प्रभावी और गुणवत्तापूर्ण बनाना, वहीं "बढ़े विश्वविद्यालय" का आशय भौतिक और शैक्षणिक संसाधनों के विस्तार से है। कार्यक्रम का शुभारम्भ पूर्वाह्न 11 बजे से हुआ और कुलपति के नेतृत्त्व में विद्यार्थियों/शोधार्थियों/कर्मचारियों/ अधिकारियों द्वारा पुस्तक पढ़ने से हुई। इस दौरान कार्यक्रम समन्वयक प्रो. निरंजन सहाय, कुलसचिव श्रीमती दीप्ति मिश्रा, कुलानुशासक प्रो. के. के. सिंह, जनसंपर्क अधिकारी प्रो. नागेन्द्र कुमार सिंह, प्रो. संतोष गुप्ता, डॉ. नवरत्न, प्रो. सुमन ओझा, उप-कुलसचिव हरिश्चंद, आनंद कुमार मौर्या, सौरभ, वरुणा देवी सहित अन्य शिक्षक/शिक्षिकाओं/ छात्र/छात्राएँ/ प्रशासनिक अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहें। साथ ही इस कार्यक्रम का आयोजन संकाय/विभाग/महाविद्यालय स्तर पर भी विभिन्न स्थलों पर आयोजित की गई।

इस कार्यक्रम के उपरांत विश्वविद्यालय स्थित दीक्षांत मंडपम में दहेज़ मुक्त भारत एवं नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर माननीय कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी, शिक्षकों, विद्यार्थियों और प्रशासनिक अधिकारियों सहित बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में नशा और दहेज जैसी कुरीतियों के प्रति जागरुकता फैलाना और इन्हें समाप्त करने के लिए सामूहिक संकल्प लेना था। माननीय कुलपति ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि नशा और दहेज जैसी सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन तभी संभव है जब युवा पीढ़ी इसे गंभीरता से ले और संकल्पित होकर कार्य करे। उन्होंने कहा, **"हमारी शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज सुधार में सक्रिय भूमिका निभाना भी है।"**

शपथ ग्रहण समारोह में सर्वप्रथम **"दहेज मुक्त भारत"** के लिए शपथ दिलाई गई। सभी ने संकल्प लिया कि वे न तो दहेज लेंगे और न ही देंगे तथा इस कुप्रथा के खिलाफ आवाज उठाएंगे। इसके बाद **"नशा मुक्त भारत"** के लिए शपथ दिलाई गई। उपस्थित सभी लोगों ने हाथ उठाकर यह संकल्प लिया कि वे स्वयं नशे से दूर रहेंगे और दूसरों को भी इसके दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करेंगे। शपथ के दौरान माननीय कुलपति ने कहा कि **"नशा एक ऐसी बुराई है जो न केवल व्यक्ति बल्कि पूरे परिवार और समाज को कमजोर**

बनाती है। हमें इसे जड़ से खत्म करना होगा।" इस दौरान मंच पर प्रो. आनंद कुमार त्यागी, प्रो. निरंजन सहाय, प्रो. के. के. सिंह, प्रो. राजेश मिश्रा, श्रीमती दीप्ती मिश्रा, हरिश्चंद, आनंद कुमार मौर्या आदि मौजूद रहे। इसी तरह विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में भी इसी समय उक्त वर्णित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रमों की कुछ झलकियाँ

MAHATMA GANDHI KASHI VIDYAPITH, VARANASI
पढ़े विश्वविद्यालय एवं बढ़े विश्वविद्यालय
GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
8xfr+4fj, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221002, भारत
Lat 25.322606° Long 82.990952°
07/03/2025 11:33 AM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
8xfr+4fj, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221002, भारत
Lat 25.322738° Long 82.990994°
07/03/2025 11:33 AM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
8xfr+4fj, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221002, भारत
Lat 25.322734° Long 82.990998°
07/03/2025 11:33 AM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
8xfr+4fj, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221002, भारत
Lat 25.322639° Long 82.991051°
07/03/2025 11:32 AM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
8xfr+4fj, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221002, भारत
Lat 25.32265° Long 82.991076°
07/03/2025 11:32 AM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
8xfr+4fj, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221002, भारत
Lat 25.322487° Long 82.990999°
07/03/2025 11:29 AM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
8xfr+4fj, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221002, भारत
Lat 25.32248° Long 82.99099°
07/03/2025 11:29 AM GMT +05:30
Google

पढ़े विश्वविद्यालय बढ़े विश्वविद्यालय

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
C19/110, मलदहिया मार्ग, जगतगंज, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221001, भारत
Lat 25.319579° Long 82.989106°
07/03/2025 12:27 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
Kv-a-12, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221001, भारत
Lat 25.319468° Long 82.989118°
07/03/2025 12:25 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
Kva17, मलदहिया मार्ग, जगतगंज, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221001, भारत
Lat 25.319446° Long 82.989323°
07/03/2025 12:25 PM GMT +05:30
Google

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
MAHATMA GANDHI KASHI VIDYAPITH, VARANASI
GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
C-19/289, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221010, भारत
Lat 25.319549° Long 82.989384°
07/03/2025 12:26 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
Kv-a-12, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221001, भारत
Lat 25.319532° Long 82.989223°
07/03/2025 12:26 PM GMT +05:30
Google

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
MAHATMA GANDHI KASHI VIDYAPITH, VARANASI
GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
Kva17, मलदहिया मार्ग, जगतगंज, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221001, भारत
Lat 25.319509° Long 82.98933°
07/03/2025 12:26 PM GMT +05:30
Google

MAHATMA GANDHI KASHI VIDYAPITH, VARANASI
GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
C-19/289, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221010, भारत
Lat 25.319566° Long 82.98939°
07/03/2025 12:28 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
C-19/289, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221010, भारत
Lat 25.319556° Long 82.989389°
07/03/2025 12:26 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
C-19/289, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221010, भारत
Lat 25.319584° Long 82.98945°
07/03/2025 12:28 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
C-19/289, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221010, भारत
Lat 25.319555° Long 82.989388°
07/03/2025 12:26 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
C-19/289, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221010, भारत
Lat 25.319556° Long 82.989389°
07/03/2025 12:27 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
C-19/289, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221010, भारत
Lat 25.319587° Long 82.989433°
07/03/2025 12:28 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
C19/110, मलदहिया मार्ग, जगतगंज, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221001, भारत
Lat 25.319577° Long 82.989105°
07/03/2025 12:27 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
C19/110, मलदहिया मार्ग, जगतगंज, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221001, भारत
Lat 25.319584° Long 82.989108°
07/03/2025 12:27 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
C-19/289, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221010, भारत
Lat 25.319593° Long 82.98943°
07/03/2025 12:28 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
C-19/289, काशी विद्यापीठ, चेतगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221010, भारत
Lat 25.319602° Long 82.989427°
07/03/2025 12:28 PM GMT +05:30
Google

जब मैंने पहली निजी पुस्तक ख़रीदी

डॉ. धर्मवीर भारती

अगस्त १९८९, बचने की उम्मीद नहीं थी। तीन-तीन ज़बर्दस्त हार्ट अटैक, एक के बाद एक। एक तो ऐसा कि नब्ज़ बन्द, सांस बन्द, धड़कन बंद। डाक्टरों ने घोषित कर दिया कि अब प्राण नहीं रहे। पर डॉ. बोर्जेस ने फिर भी हिम्मत नहीं हारी थीं। उन्होंने १०० वाल्ट्स के शाक्स दिए, भयानक प्रयोग। लेकिन वे बोले कि यदि यह मृत शरीर मात्र है तो दर्द महसूस ही नहीं होगा,पर यदि कहीं भी जरा भी एक कण प्राण शेष होंगे तो हार्ट रिवाइव कर सकता है।

प्राण तो लौटे पर इस प्रयोग में ६० प्रतिशत हार्ट सदा के लिए नष्ट हो गया। केवल ४० प्रतिशत बचा। उसमें भी तीन अवरोध हैं। ओपेन हार्ट ऑपरेशन तो करना ही होगा। पर सर्जन हिचक रहे हैं। केवल ४० प्रतिशत हार्ट है। ऑपरेशन के बाद न रिवाइव हुआ तो? तय हुआ कि अन्य विशेषज्ञों की राय ले ली जाय तब कुछ दिन बाद ऑपरेशन की सोचेंगे। तब तक घर जाकर बिना हिले-डुले विश्राम करें।

बहरहाल, ऐसी अर्द्धमृत्यु की हालत में वापस घर लाया जाता हूँ। मेरी ज़िद है कि बेडरूम में नहीं, मुझे अपने किताबों वाले कमरे में ही रक्खा जाए। वहीं लिटा दिया गया है मुझे। चलना, बोलना पढ़ना मना। दिन भर पड़े-पड़े दो ही चीज़े देखता रहता हूँ। बायीं ओर की खिड़की के सामने रह-रह कर हवा के झूलते सुपारी के पेड़ के झालदार पत्ते, और अन्दर कमरे में चारों ओर फ़र्श से लेकर छत तक ऊँची, किताबों से ठसाठस भरी आलमारियाँ। बचपन में परीकथाओं में जैसे पढ़ते थे कि राजा के प्राण उसके शरीर में नहीं तोते में रहते हैं, वैसे ही लगता था कि मेरे प्राण इस शरीर से तो निकल चुके हैं, वे प्राण इन हज़ारों किताबों में बसे हैं जो पिछले चालीस-पचास बरस में धीरे-धीरे मेरे पास जमा होती गई हैं।

कैसे जमा हुई, संकलन की शुरुआत कैसे हुई, यह कथा बाद में सुनाऊँगा। पहले तो यह बताना ज़रूरी है किताबें पढ़ने और सहेजने का शौक कैसे जागा। बचपन की बात है। उस समय आर्यसमाज का सुधारवादी आन्दोलन अपने पूरे ज़ोर पर था। मेरे पिता आर्यसमाज रानीमण्डी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

पिता की अच्छी-ख़ासी सरकारी नौकरी थी, वर्मा रोड जब बन रही थी तब बहुत कमाया था उन्होंने। लेकिन मेरे जन्म के पहले ही गांधी जी के आह्वान पर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। हम लोग बड़े

आर्थिक कष्टों से गुज़र रहे थे फिर भी घर में नियमित पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं 'आर्यमित्र' साप्ताहिक, 'वेदोदय', 'सरस्वती', 'गृहिणी' और दो बाल पत्रिकाएँ ख़ास मेरे लिए- 'बालसखा' और 'चमचम'। उनमें होती थीं परियों, राजकुमारों, दानवों और सुन्दरी राजकन्याओं की कहानियाँ और रेखाचित्र। मुझे पढ़ने की चाट लग गई। हर समय पढ़ता रहता। खान खाते समय थाली के पास पत्रिकाएँ रख कर पढ़ता। अपनी दोनों पत्रिकाओं के अलावा भी 'सरस्वती' और 'आर्यमित्र' पढ़ने की कोशिश करता।

घर में पुस्तकें भी थीं। उपनिषदें और उनके हिन्दी अनुवाद। सत्यार्थ प्रकाश। 'सत्यार्थ प्रकाश' के खण्डन-मण्डन वाले अध्याय पूरी तरह समझ में नहीं आता था पर पढ़ने में मज़ा आता था। मेरी प्रिय पुस्तक थी स्वामी दयानन्द की एक जीवनी, रोचक शैली में लिखी हुई, अनेक चित्रों से सुसज्जित। वे तत्कालीन पाखण्डों के विरुद्ध अदम्य साहस दिखाने वाले अद्भुत व्यक्तित्व थे। कितनी ही रोमांचक घटनाएँ थीं उनके जीवन की जो मुझे बहुत प्रभावित करती थीं। चूहे को भगवान का मीठा खाते देख कर मान लेना कि प्रतिमाएँ भगवान नहीं होती, घर छोड़कर भाग जाना। तमाम तीर्थों, जंगलों, गुफ़ाओं, हिम शिखरों पर साधुओं के बीच घूमना और हर जगह इसकी तलाश करना कि भगवान क्या है? सत्य क्या है? जो भी समाज विरोधी, मनुष्य विरोधी मूल्य हैं, रूढ़ियाँ हैं उनका खण्डन करना और अन्त में अपने हत्यारे को क्षमा कर उसे सहारा देना। यह सब मेरे बालमन को बहुत रोमांचित करता। जब इस सबसे थक जाता तब फिर 'बलसखा' और 'चमचम' की पहले पढ़ी हुई कथाएँ दुबारा पढ़ता।

माँ स्कूली पढ़ाई पर ज़ोर देतीं। चिंतित रहतीं कि लड़का कक्षा की किताबें नहीं पढ़ता। पास कैसे होगा। कहीं खुद साधु बन कर फिर से भाग गया तो? पिता कहते जीवन में यही पढ़ाई काम आएगी पढ़ने दो। मैं स्कूल नहीं भेजा गया था, शुरू की पढ़ाई के लिए घर पर मास्टर रक्खे गए थे। पिता नहीं चाहते थे कि नासमझ उम्र में मैं गलत संगति में पड़ कर गाली गलौज सीखूँ, बुरे संस्कार ग्रहण करूँ।

अत: स्कूल में मेरा नाम लिखाया गया जब मैं कक्षा दो तक की पढ़ाई घर पर कर चुका था। तीसरे दर्ज़े में भर्ती हुआ। उस दिन शाम को पिता उँगली पकड़ कर मुझे घुमाने ले गए। लोकनाथ की एक दुकान से ताज़ा अनार का शर्बत मिट्टी के कुल्हड़ में पिलाया और सर पर हाथ रख कर बोले- 'वायदा करो कि पाठयक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ोगे, माँ की चिंता मिटाओगे। 'उनका आशीर्वाद था या मेरा जी तोड़ परिश्रम कि तीसरे, चौथे में मेरे अच्छे नम्बर आए और पाँचवे दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया।

माँ ने आँसू भर कर गले लगा लिया, पिता मुस्कुराते रहे कुछ बोले नहीं। चूँकि अंग्रेज़ी में मेरे नम्बर सबसे ज़्यादा थे अत: स्कूल से इनाम में दो अंग्रेज़ी किताबें मिली थीं। एक में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और कुंजों में भटकते हैं और इस बहाने पक्षियों की जातियाँ, उनकी बोलियाँ, उनकी आदतों की जानकारी उन्हें मिलती हैं। दूसरी किताब थी 'ट्रस्टी द रग' जिसमें पानी के जहाज़ों की कथाएँ थी, कितने प्रकार के होते हैं। कौन-कौन-सा माल लाद कर लाते हैं, कहाँ से लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, नाविकों की ज़िन्दगी कैसी होती हैं, कैसे कैसे जीव मिलते हैं, कहाँ व्हेल होती है, कहाँ शार्क होती है।

इन दो किताबों ने एक नई दुनिया का द्वार मेरे लिए खोल दिया। पक्षियों से भरा आकाश, और रहस्यों से भरा समुद्र। पिता ने आलमारी के एक खाने में अपनी चीज़ें हटा कर जगह बनाई और मेरी दोनों किताबें उस खाने में रख कर कहा, 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है।' यहाँ से आरम्भ हुई उस बच्चे की लाइब्रेरी। बच्चा किशोर हुआ, स्कूल से कालेज, कालेज से युनिवर्सिटी गया, डाक्टरेट हासिल की, युनिवर्सिटी में अध्यापन किया, अध्यापन छोड़ कर इलाहाबाद से बम्बई आया, सम्पादन किया उसी अनुपात में अपनी लाइब्रेरी का विस्तार करता गया।

बरस दर बरस इकट्ठी होती गई ये तमाम किताबें। पर आप पूछ सकते हैं कि किताबें पढ़ने का शौक तो ठीक। किताबें इकट्ठी करने की सनक क्यों सवार हुई। उसका कारण भी बचपन का एक अनुभव है। इलाहाबाद भारत के प्रख्यात शिक्षा केन्द्रों में एक रहा है। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा स्थापित पब्लिक लाइब्रेरी से लेकर महामना मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित भारती भवन तक। विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी तथा अनेक कालेजों की लाइब्रेरी अलग। वहाँ हाइकोर्ट है अत: वकीलों की निजी लाइब्रेरियाँ, अध्यापकों की निजी लाइब्रेरियाँ।

अपनी लाइब्रेरी वैसी कभी होगी यह तो स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था, पर अपने मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी हरि भवन। स्कूल से छूट्टी मिली कि मैं उसमें जाकर जम जाता था। पिता दिवंगत हो चुके थे, लाइब्रेरी का चन्दा चुकाने का पैसा नहीं था, अत: वहीं बैठकर किताबें निकलवा कर पढ़ता रहता था। उन दिनों हिन्दी में विश्व साहित्य, विशेषकर उपन्यासों के खूब अनुवाद हो रहे थे। मुझे उन अनूदित उपन्यासों को पढ़ कर बड़ा सुख मिलता था। अपने छोटे से हरि भवन में खूब उपन्यास थे। वहीं परिचय हुआ बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की 'दुर्गेशनन्दिनी', 'कपाल कुण्डला' और 'आनंद मठ' से। टॉलस्टाय की 'अन्ना करेनिना', 'विक्टर ह्यगो का 'पेरिस का कुबड़ा', 'हंचबैक ऑफ नात्रेदाम', गोर्की की ' मदर', अलेक्जेंण्डर कुप्रिन का

'गाड़िवानों का कटरा' (यामा, दपिट) और सबसे मनोरंजक सर्वा-रीज़ का 'विचित्र वीर' (यानी डान क्विक्जोट) हिन्दी के ही माध्यम से सारी दुनिया के कथा पात्रों से मुलाक़ात करना कितना आकर्षक था।

लाइब्रेरी खुलते ही पहुँच जाता और जब लाइब्रेरियन शुक्ल जी कहते कि बच्चा अब उठो, पुस्तकालय बन्द करना है तब बड़ी अनिच्छा से उठता। जिस दिन कोई उपन्यास अधूरा छूट जाता, उस दिन मन में कसक होती कि काश इतने पैसे होते कि सदस्य बन कर किताब ईश्यू करा लाता, या काश इस किताब को ख़रीद पाता तो घर में रखता। एक बार पढ़ता, दो बार पढ़ता, बार-बार पढ़ता पर जानता था कि यह सपना ही रहेगा। भला कैसे पूरा हो पाएगा।

पिता के देहावसान के बाद तो आर्थिक संकट इतना बढ़ गया कि पूछिए मत। फीस जुटाना तक मुश्किल था। अपने शौक की किताबें ख़रीदना तो सम्भव ही नहीं था। एक ट्रस्ट से योग्य पर असहाय छात्रों को पाठ्य पुस्तकें ख़रीदने के लिए कुछ रुपए सत्र के आरम्भ में मिलते थे। उनसे प्रमुख पाठ्य पुस्तकें 'सेकेण्ड हैंण्ड' ख़रीदता था, बाकी अपने सहपाठियों से लेकर पढ़ता और नोट्स बना लेता। उन दिनों परीक्षा के बाद छात्र अपनी पुरानी पाठ्य पुस्तकें आधे दाम में बेच देते और उस कक्षा में आने वाले नए लेकिन विपन्न छात्र ख़रीद लेते। इसी तरह काम चलता।

लेकिन फिर भी मैंने जीवन की पहली साहित्यिक पुस्तक अपने पैसों से कैसे ख़रीदी, यह आज तक याद है।

उस साल इण्टरमीडियेट पास किया था। पुरानी पाठ्य पुस्तकें बेच कर बी.ए. की पाठ्य पुस्तकें लेने एक सेकण्ड हैण्ड बुक शॉप पर गया। उस बार जाने कैसे पाठ्य पुस्तकें ख़रीद कर भी दो रुपए बच गए थे। सामने के सिनेमाघर में 'देवदास' लगा था न्यू थियेटर्स वाला। बहुत चर्चा थी उसकी। लेकिन मेरी माँ को सिनेमा देखना बिल्कुल नापसंद था। उसी से बच्चे बिगड़ते हैं। लेकिन उसके गाने सिनेमा गृह के बाहर बजते थे। उसमें सहगल का एक गाना था 'दुख के दिन अब बीतत नाहीं' उसे अक्सर गुनगुनाता रहता था। कभी-कभी गुनगुनाते आँखों में आँसू आ जाते थे जाने क्यों। एक दिन माँ ने सुना। माँ का दिल तो आखिर माँ का दिल।

एक दिन बोलीं - दुख के दिन बीत जाएँगे बेटा, दिल इतना छोटा क्यों करता है धीरज से काम ले।' जब उन्हें मालूम हुआ कि यह तो फिल्म 'देवदास' का गाना है, तो सिनेमा की घोर विरोधी माँ ने कहा - अपना मन क्यों मारता है, जाकर पिक्चर देख आ। पैसे मैं दे दूँगी।' मैंने माँ को बताया कि 'किताबें बेच कर

दो रुपए मेरे पास बचे हैं।' वे दो रुपए लेकर माँ की सहमति से फिल्म देखने गया। पहला शो छूटने में देर थी, पास में अपनी परिचित किताब की दूकान थी। वहीं चक्कर लगाने लगा। सहसा देखा काउन्टर पर एक पुस्तक रक्खी है - 'देवदास', लेखक शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय - दाम केवल एक रुपया। मैंने पुस्तक उठा कर उलटी - पलटी तो पुस्तक विक्रेता बोला - 'तुम विद्यार्थी हो। यहीं अपनी पुस्तकें बेचते हो। हमारे पुराने ग्राहक हो। तुमसे अपना कमीशन नहीं लूँगा। केवल दस आने में यह किताब दे दूँगा।' मेरा मन पलट गया। कौन देखे डेढ़ रुपए में पिक्चर? दस आने में 'देवदास' ख़रीदी। जल्दी-जल्दी घर लौट आया और दो रुपए में से बचे एक रुपया छ: आना माँ के हाथ में रख दिए।

'अरे तू लौट कैसे आया? पिक्चर नहीं देखी?' माँ ने पूछा। 'नहीं माँ! फिल्म नहीं देखी, यह किताब ले आया। देखो।' माँ की आँखों में आँसू आ गए। खुशी के थे, या दुख के यह नहीं मालूम। वह मेरे अपने पैसों से ख़रीदी, मेरी अपनी निजी लाइब्रेरी की पहली किताब थी।

आज जब अपने पुस्तक संकलन पर नज़र डालता हूँ जिसमें हिन्दी अंग्रेज़ी उपन्यास, नाटक, कथा संकलन, जीवनियाँ, संस्मरण, इतिहास, कला, पुरातत्व, राजनीति की हज़ारहा पुस्तकें हैं - तब कितनी शिद्दत से याद आती है अपनी पहली पुस्तक की ख़रीदारी। रेनर मारिया रिल्के, स्टीफेन ज्वीग, मोपांसा, चेखव, टॉल्स्टाय, दोस्तावस्की येसेनिना, मायकोवस्की, सोल्जेनित्सीन, स्टीफेन स्पेण्डर, आडेन, एज़रा पाउण्ड, यूजीन ओनील, ज्यां पाल सार्त्र, आल्बेयर कामू, आयोनेस्को, के साथ पिकासो, ब्रुगेल, रेम्ब्राँ, हेब्बार, हुसेन तथा हिन्दी में कबीर, तुलसी, सूर, रसखान, जायसी, प्रेमचंद, पंत, निराला, महादेवी और जाने कितने लेखकों, चिन्तकों की इन कृतियों के बीच अपने को कितना भरा-भरा महसूस करता हूँ।

मराठी के वरिष्ठ कवि विन्दा करन्दीकर ने कितना सच कहा था उस दिन। मेरा आपरेशन सफल होने के बाद वे देखने आए थे बोले - 'भारती ये सैंकड़ों महापुरुष जो पुस्तक रूप में तुम्हारे चारों ओर विराजमान हैं। इन्हीं के आशीर्वाद से तुम बचे हो। इन्होंने तुम्हें पुनर्जीवन दिया है।' मैंने मन ही मन प्रणाम किया विन्दा को भी, इन महानुभावों को भी।

पुस्तकों के लेखन एवं प्रकाशन की दिलचस्प कहानी

प्रो. निरंजन सहाय*

उज्जवल कुमार सिंह**

पुस्तक लेखन और प्रकाशन की यात्रा एक ऐसी कहानी है, जो न केवल रचनात्मकता और कला का संगम है, बल्कि यह समाज, संस्कृति और ज्ञान के प्रसार का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका इतिहास सदियों पुराना है, जिसमें समय के साथ कई बदलाव आए हैं। लेखक के मन में विचारों का जन्म होता है, जिसे वह शब्दों में ढालकर कागज पर उकेरता है, और फिर वह पुस्तक के रूप में दुनिया तक पहुँचता है। इस लेख में हम पुस्तक लेखन और प्रकाशन के विकास को विस्तार से समझेंगे।

1. पुस्तक लेखन का प्रारंभ

पुस्तक लेखन का इतिहास मानव सभ्यता के प्रारंभिक दिनों से जुड़ा हुआ है, जब लोगों ने अपनी भावनाओं, विचारों और जानकारी को चित्रों, शिलालेखों और हस्तलिखित पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त करना शुरू किया। प्राचीन सभ्यताओं, जैसे मेसोपोटामिया, मिस्र और भारत में लेखन का उद्देश्य मुख्य रूप से सरकारी रिकॉर्ड, धार्मिक ग्रंथों और सामाजिक जीवन से संबंधित दस्तावेजों का संकलन था। इन क्षेत्रों में लेखन का कार्य शासन, धर्म और समाज के विभिन्न पहलुओं को व्यवस्थित रूप से संरक्षित करने का था। मेसोपोटामिया और मिस्र में पहली बार लेखन का उपयोग शासन के संचालन, व्यापारिक लेन-देन और धार्मिक कार्यों के लिए हुआ। इन सभ्यताओं के लोग शिलालेखों और शिला पत्रों पर अपनी जानकारी अंकित करते थे, ताकि वह पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित रह सके। भारतीय उपमहाद्वीप में, वेदों और उपनिषदों के रूप में ज्ञान का संग्रह हुआ, जो न केवल धार्मिक, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण थे। धार्मिक ग्रंथों का लेखन एक तरह से मानवता की आध्यात्मिक यात्रा और अस्तित्व के सवालों का उत्तर देने का प्रयास था। उदाहरण के लिए, वेद और उपनिषदों के माध्यम से भारतीय ऋषियों ने ब्रह्म, आत्मा, और जीवन के उद्देश्य जैसे गहरे दार्शनिक प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया।

मध्यकाल में, खासकर यूरोप में, पुनर्जागरण (Renaissance) के समय पुस्तक लेखन का उद्देश्य और क्षेत्र और भी विस्तृत हुआ। पुनर्जागरण काल में, यूरोपीय लेखकों ने धार्मिक विषयों के अलावा, वैज्ञानिक तथ्यों, कला, साहित्य और दर्शन पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। यह काल विचारधारा में क्रांतिकारी बदलाव लेकर आया, जिसमें लोग नए दृष्टिकोण से दुनिया को देखने लगे। 15वीं और 16वीं शताबदी के दौरान, गैलीलियो, दार्विन, न्यूटन और शेक्सपियर जैसे महान व्यक्तित्वों ने विज्ञान, साहित्य और मानविकी के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए। पुनर्जागरण के समय, पुस्तक लेखन ने केवल धार्मिक ग्रंथों की सीमाओं को पार किया, बल्कि समाज, राजनीति, और साहित्य के नए विचारों को भी बढ़ावा

दिया। इसमें जादुई कथाओं से लेकर गहरे दार्शनिक विचारों तक ने अपनी जगह बनाई। उदाहरण के लिए, शेक्सपियर के नाटक न केवल मानव स्वभाव के जटिल पहलुओं को उजागर करते थे, बल्कि उन्होंने समाज के बदलते दृष्टिकोण और मानवीय संबंधों को भी नए तरीके से प्रस्तुत किया।

पुस्तक लेखन में विज्ञान और दर्शन का प्रवेश एक महत्वपूर्ण मोड़ था। गैलीलियो और न्यूटन जैसे वैज्ञानिकों ने अपनी खोजों को पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया, जिससे मानवता के ज्ञान का दायरा और भी विस्तृत हुआ। इन पुस्तकों ने न केवल यूरोप, बल्कि सम्पूर्ण दुनिया में वैज्ञानिक सोच और प्रयोगशाला के कामकाजी तरीकों का प्रचार किया। इसके साथ ही, दार्शनिक विचारक जैसे रेनै देकार्ट, इमैनुएल कांट और जॉन लॉक ने अपनी रचनाओं के माध्यम से तर्क, अनुभव और ज्ञान के सिद्धांतों पर नए दृष्टिकोण प्रस्तुत किए। इन नए दृष्टिकोणों ने न केवल पुस्तकों के लिखने के उद्देश्यों को बदल दिया, बल्कि लोगों की सोच को भी विस्तृत किया। अब, किताबें केवल धार्मिक या शासकीय कार्यों के लिए नहीं, बल्कि मानव जीवन, उसके अस्तित्व, नैतिकता और समाज के मुद्दों को समझने के लिए भी लिखी जाने लगीं।

समय के साथ-साथ पुस्तक लेखन के उद्देश्य और क्षेत्र में निरंतर विस्तार हुआ। आधुनिक युग में, जहां एक ओर किताबें शिक्षा और ज्ञान का मुख्य स्रोत बनीं, वहीं दूसरी ओर साहित्य, कला, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, और राजनीति जैसे क्षेत्रों में भी पुस्तकों का लेखन तेजी से बढ़ा। आजकल, पुस्तक लेखन न केवल शैक्षिक उद्देश्य के लिए किया जाता है, बल्कि यह मनोरंजन, समाजिक बदलाव और व्यक्तिगत विचारों की अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली साधन भी बन चुका है। पुस्तक लेखन ने समाज में बदलाव के लिए आंदोलन उत्पन्न किए हैं। विभिन्न आंदोलन, जैसे महिला अधिकार, पर्यावरण संरक्षण, और जातिवाद विरोधी आंदोलन, ने भी पुस्तक लेखन के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाई। यह सब किताबों और लेखकों के योगदान से ही संभव हुआ है।

इस प्रकार, पुस्तक लेखन की यात्रा एक अनंत प्रक्रिया रही है, जो समय-समय पर समाज और ज्ञान के विकास के साथ बदलती रही है। प्राचीन धार्मिक ग्रंथों से लेकर मध्यकाल के पुनर्जागरण तक, और फिर आधुनिक विज्ञान और साहित्य तक, पुस्तकों ने मानव सभ्यता के विभिन्न पहलुओं को संरक्षित किया और नए विचारों के फैलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। किताबें न केवल ज्ञान के भंडार के रूप में कार्य करती हैं, बल्कि समाज के विकास और संस्कृति के संवर्धन में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

2. प्रकाशन की शुरुआत

प्रकाशन का इतिहास मानव सभ्यता के विकास के साथ जुड़ा हुआ है, और यह एक महत्वपूर्ण बिंदु रहा है जो ज्ञान के प्रसार, समाज के विकास, और सूचना के संग्रहण में निर्णायक भूमिका निभाता है। प्रारंभ में, जब लेखन का कार्य हाथ से होता था, तब ज्ञान का आदान-प्रदान सीमित था। लेकिन जैसे-जैसे सभ्यताएँ विकसित होती गईं, लेखन और प्रकाशन के तरीके भी अधिक व्यवस्थित और प्रभावशाली होते गए।

प्रकाशन की शुरुआत से पहले, मानव सभ्यता में शिलालेखों और चित्रलिपि का उपयोग हुआ था। इन सभ्यताओं में जानकारी को पत्थर, शिला, और मिट्टी की पट्टियों पर लिखा जाता था। लेखन का यह प्रारंभिक रूप मुख्य रूप से प्रशासनिक और धार्मिक कार्यों के लिए था, लेकिन धीरे-धीरे यह साहित्यिक और शैक्षिक उद्देश्यों के लिए भी इस्तेमाल होने लगा। भारत में, वेद, उपनिषद, और महाभारत जैसे ग्रंथों का लेखन हुआ, जो भारतीय समाज के धार्मिक, दार्शनिक, और सांस्कृतिक जीवन को संरक्षित करते थे। मेसोपोटामिया और मिस्र में भी शिलालेखों और पेटी के लेखन के माध्यम से प्रशासन और धर्म से जुड़ी जानकारी रखी जाती थी। लेकिन इस समय में प्रकाशन का कोई औपचारिक तरीका नहीं था। ज्ञान केवल विशेष वर्गों तक ही सीमित था।

पुस्तक प्रकाशन के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण घटना जो आई, वह थी जोहान गुटेनबर्ग द्वारा 15वीं शताब्दी में प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार। इससे पहले, किताबें हाथ से लिखी जाती थीं, जो अत्यधिक महँगी और समय-साध्य होती थीं। गुटेनबर्ग के आविष्कार ने पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में एक क्रांति ला दी। प्रिंटिंग प्रेस ने न केवल किताबों के उत्पादन की गति को बढ़ाया, बल्कि इसे सस्ता भी बना दिया। इसके परिणामस्वरूप, ज्ञान का प्रसार तेज़ी से हुआ, और यह समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचने लगा। गुटेनबर्ग का पहला बड़े पैमाने पर मुद्रित ग्रंथ "गुटेनबर्ग बाइबल" था, जो 1455 के आसपास प्रकाशित हुआ। यह पुस्तक यूरोप में प्रिंटिंग प्रेस के प्रभाव का पहला उदाहरण थी। इसने न केवल धार्मिक ग्रंथों को आम लोगों तक पहुँचाया, बल्कि शिक्षा और साहित्य को भी व्यापक स्तर पर फैलाने में मदद की। गुटेनबर्ग के बाद, यूरोप में प्रकाशन उद्योग तेजी से विकसित हुआ, और यह विश्वभर में ज्ञान के प्रसार का मुख्य साधन बन गया।

16वीं शताबदी में, प्रिंटिंग प्रेस के विकास के बाद प्रकाशन उद्योग ने व्यापक रूप से विस्तार किया। यूरोप में पुनर्जागरण (Renaissance) के दौर में कला, विज्ञान, साहित्य, और दर्शन के नए विचारों को किताबों के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस काल में न केवल धार्मिक ग्रंथों, बल्कि ऐतिहासिक, दार्शनिक, और वैज्ञानिक पुस्तकों का भी प्रकाशन बढ़ा। मार्टिन लूथर का "95 थीसिस" (1517) और अन्य धार्मिक सुधारक किताबों का मुद्रण न केवल धर्म से जुड़ी विचारधाराओं को चुनौती देता था, बल्कि समाज में नए दृष्टिकोणों का निर्माण भी करता था। इसी समय में, साहित्य और कला के प्रमुख कामों का भी प्रकाशन हुआ, जिनमें शेक्सपियर के नाटक, दांते के "डेविना कोमेडिया" और अन्य महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियाँ शामिल हैं।

19वीं शताबदी में औद्योगिक क्रांति के प्रभाव से प्रकाशन उद्योग में और अधिक परिवर्तन हुआ। अब, बड़े पैमाने पर प्रिंटिंग प्रेस के माध्यम से किताबों का मुद्रण संभव हुआ, जिससे प्रकाशन की लागत में कमी आई और किताबें सस्ते दामों पर उपलब्ध होने लगीं। इसके अलावा, रेल और पत्र-वाहन जैसी परिवहन प्रणालियों के विकास से पुस्तकों के वितरण में भी तेजी आई। सार्वजनिक पुस्तकालयों का निर्माण और पुस्तक मेलों का आयोजन भी इस समय में शुरू हुआ, जिससे अधिक से अधिक लोगों तक किताबें पहुँचने लगीं। इसके परिणामस्वरूप, दुनिया भर में शिक्षा और साहित्य का स्तर बढ़ा और साक्षरता दर में भी वृद्धि हुई।

20वीं शताबदी में, विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, पुस्तक प्रकाशन ने एक और महत्वपूर्ण मोड़ लिया। इलेक्ट्रॉनिक प्रिंटिंग तकनीकों का विकास हुआ, जिससे किताबों का मुद्रण और वितरण और भी सस्ता और तेज़ हो गया। इसके अलावा, इंटरनेट और डिजिटल मीडिया के आगमन ने प्रकाशन उद्योग को और भी व्यापक बना दिया। आजकल, ऑनलाइन प्लेटफार्म जैसे अमेज़न, गूगल बुक्स और अन्य डिजिटल पुस्तक विक्रेताओं के माध्यम से किताबें सीधे पाठकों तक पहुँचाई जा रही हैं। स्व-प्रकाशन (self-publishing) के माध्यम से, लेखक अब अपनी किताबों को पारंपरिक प्रकाशकों की आवश्यकता के बिना प्रकाशित कर सकते हैं। इससे न केवल लेखकों को स्वतंत्रता मिली, बल्कि पाठकों को भी अधिक विविधता में किताबें पढ़ने का अवसर मिला।

प्रकाशन की शुरुआत एक लंबी यात्रा रही है, जो प्राचीन शिलालेखों और चित्रलिपि से लेकर आज के डिजिटल युग तक फैली हुई है। गुटेनबर्ग के प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार ने प्रकाशन के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाया और इसके बाद के वर्षों में औद्योगिक क्रांति और डिजिटल क्रांति ने इसे और विकसित किया। आजकल, पुस्तकें एक वैश्विक माध्यम बन चुकी हैं जो ज्ञान, संस्कृति और विचारों के आदान-प्रदान का सबसे प्रभावशाली साधन हैं।

3. पुस्तक लेखन में लेखक का योगदान

पुस्तक लेखन में लेखक का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुमुखी होता है। लेखक न केवल शब्दों के माध्यम से विचारों का संप्रेषण करता है, बल्कि वह समाज और संस्कृति की दिशा निर्धारित करने में भी प्रमुख भूमिका निभाता है। लेखक की रचनाएँ किसी समाज, संस्कृति, या कालखंड की मानसिकता, विचारधारा, और मूल्य प्रणाली को उजागर करती हैं। पुस्तक लेखन में लेखक का योगदान कई स्तरों पर देखा जा सकता है, जैसे साहित्यिक, शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक।

लेखक का सबसे बड़ा योगदान साहित्यिक दृष्टिकोण से होता है। वह अपनी कल्पना, संवेदनशीलता और रचनात्मकता से नए विचार और दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। साहित्य में लेखक समाज की विद्यमान समस्याओं, संघर्षों और मानवीय संवेदनाओं को प्रकट करता है। उनके लेखन के माध्यम से पाठकों को नए दृष्टिकोण, विचार और जीवन के प्रति नई समझ प्राप्त होती है। लेखक काल, स्थान और परिस्थिति के संदर्भ में महत्वपूर्ण रचनाएँ उत्पन्न करता है जो समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति का आईना होती हैं। उदाहरण के तौर पर, शेक्सपियर, गोथे, और रवींद्रनाथ ठाकुर (रवींद्रनाथ ठाकुर) जैसे लेखकों ने न केवल अपनी साहित्यिक रचनाओं से दुनिया को प्रभावित किया, बल्कि उन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहरा प्रभाव भी डाला।

लेखक का योगदान शैक्षिक क्षेत्र में भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वह पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान और शिक्षा का प्रसार करता है। लेखकों द्वारा लिखी गई शैक्षिक पुस्तकों, शोधपत्रों, और पाठ्यक्रम सामग्री ने विद्यार्थियों के सीखने के तरीके को प्रभावित किया है। इन लेखकों ने न केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण विषयों को सरल और समझने योग्य रूप में प्रस्तुत किया, बल्कि उन्होंने समाज में शिक्षा की दिशा और गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए भी कार्य किया। जैसे, महान गणितज्ञ और वैज्ञानिक "आल्बर्ट आइंस्टीन" और "कार्ल सागान" जैसे लेखक न केवल अपनी वैज्ञानिक खोजों के बारे में लिखते थे, बल्कि उन्होंने विज्ञान को आम जनता के लिए भी सुलभ और दिलचस्प बनाया।

पुस्तक लेखन में लेखक का योगदान सामाजिक परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कई लेखक अपने लेखन के माध्यम से समाज में व्याप्त अन्याय, असमानता और बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाते हैं। उनके विचारों और शब्दों ने समाज में बड़े पैमाने पर जागरूकता पैदा की है और सामाजिक सुधारों की दिशा निर्धारित की है। उदाहरण स्वरूप, महात्मा गांधी की रचनाएँ न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरक तत्व बनीं, बल्कि उन्होंने समाज में नैतिकता, सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का प्रचार किया। इसी तरह, जोसेफ हेलर और चार्ल्स डिकेंस जैसे लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सत्ता के दुरुपयोग और समाज की विडंबनाओं को उजागर किया।

लेखक संस्कृति और समाज के बीच पुल का कार्य भी करता है। वह अपने लेखन के माध्यम से अपने समाज की सांस्कृतिक धरोहर, परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित करता है। लेखकों की रचनाएँ न केवल समाज के इतिहास और संस्कृति को जीवित रखती हैं, बल्कि वे भविष्य की पीढ़ियों के लिए इन

धरोहरों को समझने का माध्यम भी बनती हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय महाकाव्य जैसे रामायण और महाभारत ने भारतीय संस्कृति और परंपराओं को न केवल भारत में, बल्कि दुनिया भर में प्रसारित किया।

लेखक का योगदान वैचारिक क्षेत्र में भी अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। लेखक समाज की वर्तमान स्थितियों और समस्याओं पर विचार करता है, और अपने लेखन के माध्यम से समाधान प्रस्तुत करता है। वह अपनी रचनाओं के माध्यम से विचारों को चुनौती देता है, नए दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, और लोगों को गहरे चिंतन और आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। लेखक सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत स्तर पर गहरी छानबीन करता है और पाठकों को सोचने के लिए मजबूर करता है। आधुनिक लेखक जैसे माओ त्से तुंग और कार्ल मार्क्स ने अपनी रचनाओं के माध्यम से पूरी दुनिया में वैचारिक क्रांति का सूत्रपात किया।

पुस्तक लेखन में लेखक का योगदान न केवल साहित्यिक और शैक्षिक है, बल्कि उसका समाज, संस्कृति, और विचारधारा पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। लेखक समाज की बुराइयों को उजागर करता है, नए विचार प्रस्तुत करता है और सामाजिक परिवर्तन के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। उसके शब्दों में शक्ति होती है जो दुनिया को बदलने का सामर्थ्य रखती है। लेखकों का यह योगदान न केवल उनकी पुस्तकों तक सीमित रहता है, बल्कि उनका प्रभाव सदियों तक समाज और संस्कृति पर बना रहता है।

4. प्रकाशन की प्रक्रिया

प्रकाशन की प्रक्रिया एक जटिल और व्यवस्थित कदमों की श्रृंखला है, जिसमें लेखक से लेकर पाठक तक पुस्तक या लेख की यात्रा होती है। यह प्रक्रिया कई चरणों में विभाजित होती है, और प्रत्येक चरण का अपना महत्व होता है। आइए, इसे विस्तार से समझते हैं:

प्रकाशन प्रक्रिया का पहला चरण लेखन है, जिसमें लेखक अपने विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करता है। यह चरण बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि लेखक की रचनात्मकता, विचारधारा, और उद्देश्य इस चरण में परिलक्षित होते हैं। लेखक द्वारा लिखी गई सामग्री का प्रारंभिक रूप एक मांसल विचार या कहानी से होता है, जो धीरे-धीरे पूर्ण पुस्तक या आलेख में विकसित होती है। लेखन के बाद अगला चरण संपादन का होता है, जिसमें लेखक या संपादक पुस्तक के प्रारूप और सामग्री में सुधार करते हैं। संपादन में वर्तनी, व्याकरण, शैली, और स्पष्टता की जांच की जाती है। यह कदम यह सुनिश्चित करता है कि पुस्तक में कोई

गलतियां या अस्पष्टताएँ न हों और यह पठनीय हो। संपादन का कार्य लेखन को अधिक सटीक, आकर्षक और पेशेवर बनाता है।

संपादन के बाद पुस्तक का डिज़ाइन और लेआउट तैयार किया जाता है। इसमें कवर डिज़ाइन, चित्र, और पृष्ठों का स्वरूप शामिल होता है। पुस्तक का कवर पहली चीज़ होती है जो पाठक को आकर्षित करती है, इसलिए इसे आकर्षक और विषय के अनुरूप डिजाइन किया जाता है। पृष्ठों का लेआउट भी पठनीयता को प्रभावित करता है, जिससे पढ़ने में सहजता बनी रहती है। डिज़ाइन और लेआउट तैयार होने के बाद, पुस्तक को मुद्रित किया जाता है। मुद्रण एक तकनीकी प्रक्रिया है, जिसमें कम्प्यूटर से डिज़ाइन की गई सामग्री को मुद्रण मशीन में भेजा जाता है। यहाँ पर पुस्तक के कई प्रतियाँ तैयार की जाती हैं, जो बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध होती हैं। मुद्रण के दौरान कागज की गुणवत्ता, रंग, और प्रिंटिंग तकनीक का ध्यान रखना होता है ताकि पुस्तक को आकर्षक और उच्च गुणवत्ता वाली बनाई जा सके।

मुद्रण के बाद अगला कदम वितरण का होता है। यहाँ, पुस्तक को विभिन्न खुदरा विक्रेताओं, पुस्तकालयों, और ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर भेजा जाता है। वितरण प्रक्रिया में पुस्तक की पहुँच और बिक्री को बढ़ाने के लिए विभिन्न रणनीतियाँ अपनाई जाती हैं। पुस्तक की लोकप्रियता और मांग के आधार पर वितरण क्षेत्र का विस्तार किया जाता है। प्रकाशन के बाद पुस्तक का प्रचार करना जरूरी होता है ताकि पाठक को इसके बारे में जानकारी हो। विपणन के लिए पुस्तक के लेखक, प्रकाशक और वितरक विभिन्न रणनीतियाँ अपनाते हैं। इसमें मीडिया, सोशल मीडिया, पुस्तक मेलों, और पुस्तक समीक्षाओं का उपयोग किया जाता है। पुस्तक के प्रचार-प्रसार से इसकी बिक्री बढ़ती है और अधिक पाठकों तक पहुँचती है।

इस प्रकार, प्रकाशन की प्रक्रिया एक बहुपरक और सुसंगत कार्य है, जिसमें लेखन से लेकर वितरण तक कई महत्वपूर्ण कदम होते हैं। हर चरण में सतर्कता और ध्यान देना जरूरी होता है ताकि पुस्तक को उच्च गुणवत्ता के साथ पाठकों तक पहुँचाया जा सके। यह प्रक्रिया न केवल लेखक और प्रकाशक के लिए, बल्कि साहित्य प्रेमियों के लिए भी एक मूल्यवान अनुभव होती है।

5. डिजिटल युग में प्रकाशन

डिजिटल युग में प्रकाशन ने पारंपरिक प्रकाशन विधियों को पूरी तरह से बदल दिया है। इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों के विकास ने लेखक, प्रकाशक और पाठक के बीच संबंधों को नया रूप दिया है। यह लेखन और प्रकाशित सामग्री की सुलभता, वितरण, और प्रचार के तरीकों को सरल और अधिक प्रभावी

बनाता है। डिजिटल पुस्तकें (eBooks), ऑनलाइन पत्रिकाएँ, ब्लॉगिंग, सोशल मीडिया का उपयोग, और ओपन एक्सेस मॉडल। इसके अलावा, हम पारंपरिक प्रकाशन उद्योग में डिजिटल तकनीकी परिवर्तन और इसके प्रभाव पर भी गौर करेंगे।

डिजिटल प्रकाशन का आरंभ 1980 के दशक के अंत में हुआ था, जब कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग बढ़ा। पहले के समय में किताबों और पत्रिकाओं का प्रकाशन केवल मुद्रित रूप में होता था, लेकिन डिजिटल युग में जैसे-जैसे तकनीकी विकास हुआ, किताबों और अन्य सामग्री का इलेक्ट्रॉनिक संस्करण तैयार किया जाने लगा। प्रारंभ में PDF और ePub जैसे फॉर्मेट्स में किताबें प्रकाशित होने लगीं, और फिर स्मार्टफोन और ई-रीडर डिवाइसों के साथ ये अधिक सुलभ हो गईं।

डिजिटल किताबों का प्रकाशन पारंपरिक मुद्रित पुस्तकों के मुकाबले सस्ता और अधिक सुलभ हो गया है। लेखक अब सीधे अपने पाठकों तक पहुँच सकते हैं बिना किसी महंगे प्रकाशक या वितरण चैनल के। प्लेटफ़ॉर्म जैसे कि Amazon Kindle, Apple Books, और Google Play Books ने eBooks को मुख्यधारा में लाकर पाठकों के लिए पुस्तकें उपलब्ध कराई हैं। eBooks के लाभों में सबसे प्रमुख लाभ यह है कि वे प्रकाशन लागत को कम करते हैं, पुस्तक वितरण की प्रक्रिया को सरल और त्वरित बनाते हैं, और पाठकों को किसी भी स्थान से किताबें खरीदने का अवसर प्रदान करते हैं। साथ ही, पाठक अपने डिवाइस पर कई किताबें स्टोर कर सकते हैं, जिससे उन्हें पुस्तकालय के लिए अधिक जगह नहीं चाहिए होती।

डिजिटल युग ने ब्लॉगिंग और ऑनलाइन पत्रिकाओं के रूप में नए लेखन प्लेटफ़ॉर्म का निर्माण किया है। पहले, लेखकों को पारंपरिक पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रकाशित होने के लिए कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। लेकिन अब कोई भी लेखक अपनी सामग्री को सीधे इंटरनेट पर प्रकाशित कर सकता है और पाठकों से प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकता है। ब्लॉगिंग ने न केवल व्यक्तिगत विचारों और अनुभवों को साझा करने का एक तरीका दिया, बल्कि यह एक पेशेवर मंच भी बन गया है। लेखकों को अब अपनी कृतियों को बिना किसी बाधा के सीधे अपनी वेबसाइट या सोशल मीडिया के माध्यम से प्रकाशित करने का अवसर मिलता है। इससे लेखकों को स्वतंत्रता मिली है और वे अपनी आवाज़ को बिना किसी दमन या संकोच के प्रस्तुत कर सकते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, और लिंक्डइन ने लेखक और पाठकों के बीच संवाद स्थापित करने का एक नया तरीका प्रदान किया है। लेखक अब अपने काम को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने के लिए इन प्लेटफ़ॉर्म्स का उपयोग करते हैं। सोशल

मीडिया पर प्रचार और किताबों का विपणन लेखकों को उनकी पुस्तकों को अधिक लोकप्रिय बनाने में मदद करता है। साथ ही, ये प्लेटफ़ॉर्म लेखक को सीधे पाठकों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने का मौका भी प्रदान करते हैं, जो उनके लेखन के स्तर को बेहतर बनाने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, एक लेखक अपने नए काम का एक अंश या अध्याय सोशल मीडिया पर साझा कर सकता है, और पाठक उस पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकते हैं।

डिजिटल युग में एक महत्वपूर्ण बदलाव ओपन एक्सेस (Open Access) मॉडल का है, जिसमें शोध पत्र, पुस्तकें, और अन्य शैक्षिक सामग्री मुफ्त में ऑनलाइन उपलब्ध कराई जाती हैं। इससे ज्ञान का प्रसार अधिक तेज़ी से हुआ है, और यह वैश्विक स्तर पर शैक्षिक और शोध कार्यों को बढ़ावा देने का एक प्रभावी तरीका साबित हुआ है। ओपन एक्सेस मॉडल ने प्रकाशन उद्योग को भी एक नया रूप दिया है, जहाँ एक ओर प्रकाशक अपनी सामग्री से लाभ कमा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर लेखक और पाठक मुफ्त में ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। पारंपरिक प्रकाशन उद्योग में बहुत सी प्रक्रियाएँ होती हैं, जैसे कि मुद्रण, वितरण, और विपणन, जो समय और लागत की दृष्टि से महँगी होती हैं। इसके मुकाबले, डिजिटल प्रकाशन में इन सभी प्रक्रियाओं का आधुनिकीकरण किया गया है, जिससे पुस्तकें तेजी से और सस्ती कीमतों पर पाठकों तक पहुँचती हैं। इसके बावजूद, पारंपरिक प्रकाशन का अपना एक मूल्य है, क्योंकि यह गुणवत्ता, संपादन और विपणन के मामले में अधिक पेशेवर होता है।

डिजिटल प्रकाशन ने कई नए अवसरों को उत्पन्न किया है, लेकिन इसके साथ कुछ समस्याएँ और चुनौतियाँ भी हैं। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि डिजिटल सामग्री को चोरी और अवैध डाउनलोडिंग से बचाना मुश्किल होता है। इसके अलावा, इंटरनेट पर भारी मात्रा में सामग्री होने के कारण गुणवत्ता की पहचान करना भी मुश्किल हो जाता है। साथ ही, पारंपरिक प्रकाशन उद्योग को डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है, जिससे उनके व्यवसाय मॉडल में बदलाव आ रहा है। डिजिटल युग में प्रकाशन ने पारंपरिक विधियों को चुनौती दी है और नया रूप दिया है। इससे लेखकों को अपनी कृतियाँ साझा करने, पाठकों तक पहुँचने और वैश्विक स्तर पर संवाद करने के नए अवसर मिले हैं। हालांकि इसमें कुछ चुनौतियाँ भी हैं, लेकिन इसके लाभों को देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि डिजिटल प्रकाशन भविष्य में साहित्य और ज्ञान के प्रसार का प्रमुख साधन बन चुका है।

आजकल पुस्तकें न केवल एक देश तक सीमित रहती हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर वितरण का नया दौर शुरू हो चुका है। इंटरनेट, ई-कॉमर्स और डिजिटल प्लेटफार्मों ने पुस्तकों को पूरी दुनिया में पहुँचाने में

मदद की है। इससे न केवल बड़े लेखक, बल्कि नए लेखक भी अपनी रचनाओं को दुनिया भर में प्रस्तुत कर सकते हैं। इसके अलावा, पुस्तकों का अनुवाद भी अब आसान हो गया है, जिससे पुस्तकें अलग-अलग भाषाओं और संस्कृतियों तक पहुँच पा रही हैं। पुस्तक लेखन और प्रकाशन की यात्रा मानव सभ्यता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। इसका इतिहास सदियों पुराना है और समय के साथ इसमें कई बदलाव आए हैं। पहले जहाँ यह केवल हाथ से लिखे जाने वाले धार्मिक और शासकीय ग्रंथों तक सीमित था, वहीं अब यह वैश्विक स्तर पर ज्ञान के प्रसार का प्रमुख माध्यम बन चुका है। डिजिटल क्रांति और स्व-प्रकाशन के माध्यम से इस उद्योग में और भी सुधार और विकास हुआ है।

अंततः, पुस्तक लेखन और प्रकाशन न केवल एक व्यक्तिगत रचनात्मक प्रक्रिया है, बल्कि यह समाज के विकास, शिक्षा और सामाजिक चेतना के विस्तार का एक अहम हिस्सा है। लेखक और प्रकाशक के सामूहिक प्रयास से ज्ञान, विचार और सृजनात्मकता का प्रसार होता है, जो समग्र रूप से मानवता के विकास में सहायक सिद्ध होता है।

लेखक परिचय

* **प्रो. निरंजन सहाय,** आचार्य, हिंदी और अन्य भारतीय भाषा विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

** **उज्जवल कुमार सिंह**, शोध छात्र, हिंदी और अन्य भारतीय भाषा विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी एवं डॉक्टोरल फेलो, राष्ट्रीय परिक्षण सेवा – भारत, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सारनाथ स्तूप

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥

- हितोपदेश

किताबें

किताबें
करती हैं बातें
बीतें ज़मानों की
दुनिया की, इंसानों की
आज की, कल की
एक-एक पल की
ख़ुशियों की, ग़मों की
फूलों की, बमों की
जीत की, हार की
प्यार की, मार की।
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें?
किताबें, कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के क़िस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकिट का राज़ है
किताबों में साइंस की आवाज़ है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे?
किताबें, कुछ कहना चाहती हैं।
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

- सफ़दर हाश्मी